अप्रैल - जून 2022
अंक - 191

अनुवाद
Anuvad

भारतीय अनुवाद परिषद
Translators' Association of India

अनुक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मातृभाषा और अनुवाद / **(संपादकीय)** — 5

दांपत्य-दंडविधि का आईन : पं. रूपनारायण पांडेय का व्यंग्य अनुवाद / **डॉ. अरुणाकर पांडेय** — 7

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वप्न और अनुवाद की भूमिका / **डॉ. इंदू कुमारी** — 14

भाषायी सिद्धांत और अनुवाद की चुनौतियाँ / **केशव** — 20

भारत की भाषायी विविधता और अनुवाद / **डॉ. बिमलेंदु तीर्थंकर** — 26

व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुवाद का अंतर्संबंध / **डॉ. अभिजीत पायेङ्** — 32

संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषाएँ और अनुवाद / **सुनील भुटानी** — 36

अभिनेत्री (अंग्रेजी से अनूदित कहानी) / **डॉ. ज्योत्सना शर्मा** — 40

अनुवाद का प्रेय और श्रेय / **डॉ. श्रीनारायण समीर** — 43

भाग्य का बोझ (रूसी कविता का अनुवाद) / **इवान वलास्यूक** (अनु. **डॉ. सोनू सैनी**) — 51

Puncture / **Gulzar Singh Sandhu (Tr. Dr. Madhuri Chawla)** — 52

साहित्यकार, अनुवादक, प्रशासक श्री वीरेंद्र कुमार बरनवाल : एक परिचय / **डॉ. शगुन अग्रवाल** — 55

सूचना क्रांति और मशीनी अनुवाद / **डॉ. मीना पांडेय** — 61

अनुवाद-कार्य और गीता प्रेस की स्तुत्य भूमिका / **डॉ. मुकुल शर्मा** — 70

Internalising the East Through Translation / **Shree Purohit Swami & W.B. Yeats (Tr. Dr. Ruchika Gulati)** — 76

अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य / **आकांक्षा मोहन** — 81

एक पागल मुर्गी (चीनी कहानी) / **छाओ वन-शूऐन** (अनु. **डॉ. निशित कुमार**) — 91

छाओ वन-शूऐन

अनु. डॉ. निशित कुमार

एक पागल मुर्गी

प्रत्येक वर्ष वसंत के मौसम में, हमेशा कुछ मुर्गियाँ ऐसी होती हैं जो "अंडा सेने" की अपनी इच्छा को रोक नहीं पाती हैं। उन दिनों वो मुश्किल से खाती-पीती हैं और हर जगह केवलअंडे की तलाश में रहती हैं। जैसे ही उन्हें कहीं अंडा दिख जाता, वे खुशी से "क क क" की आवाज लगाती हैं और फिर अंडे के चारों ओर गोल-गोल घूमने लगती हैं। फिर वो अपने पंखों को फैला कर धीरे-धीरे नीचे बैठ जाती हैं और अंडे को अपने स्तन से लगाकर गर्म करना शुरू कर देती हैं। लेकिन कई परिवारों का इरादा चूजों को पालने का नहीं होता। इसलिए वे मन-ही-मन इन मुर्गियों के "अंडा सेने" की इच्छा से सहमत नहीं होते। इसके साथ-साथ वसंत के मौसम में मुर्गियों का अंडे देने का समय भी होता है। ये मुर्गियाँ जैसे ही अंडे सेकने वाली मनोस्थिति में जाती हैं वैसे ही जुनूनी हो जाती हैं। उन्हें न तो सोने की सुध रहती है और न ही खाने की। परिणाम यह होता है कि वो अंडे देना भी बंद कर देती हैं। इस कारण से मालिक नाराज हो जाता है। अतः मुर्गियाँ ऐसी मनोस्थिति में न जाएँ, इसके लिए वो कई तरह के उपाय करता है।

इन उपायों को "मुर्गी को जगाना" कहा जाता है।

मुझे कई वर्ष पहले की एक घटना हमेशा याद आती है। मेरे घर में एक काली मुर्गी हुआ करती थी।

उस वसंत वो काली मुर्गी भी अंडे सेकना चाहती थी। सबसे पहले मेरी माँ ने यह पहचान लिया कि यह मुर्गी अंडे सेने वाली मनोस्थिति में जा रही है। क्योंकि वो उसे कई बार दाना डालतीं, लेकिन पातीं कि उस मुर्गी का मन खोया-खोया सा है और वो बस एक-दो दाने कभी चुगती और फिर से कोने में अकेले जाकर बैठ जाती। माँ ने यह देख कर कहा, "क्या इसका मन अंडे सेने का हो रहा है?" हम सब बच्चा पार्टी यह सुनकर बहुत खुश हुए : "वाह! चूजे, चूजे आएँगे।"

माँ ने कहा, "नहीं। तुम्हारी मौसी के घर पहले ही एक मुर्गी ने चूजे पैदा कर दिए हैं। इस काली मुर्गी को अंडे देने चाहिए। यह सबसे ज्यादा अंडे देने वाली मुर्गियों में से है।"

मैं अपनी माँ की आँखों में देख सकता था कि वो अपने मन में पहले ही गिनती कर

चुकी थीं कि वसंत में यह मुर्गी कितने अंडे देगी। और इन अंडों के वदले कितना नमक-तेल-मिर्च खरीदा जा सकता है। उन्होंने काली मुर्गी की ओर देखा और उन्हें थोड़ी शर्मिंदगी भी महसूस हुई। लेकिन अंत में कहा, "इसे विलकुल भी अंडे सेने मत देना।"

उस दिन, माँ ने आखिरकार पहचान ही लिया कि काली मुर्गी का वास्तव में अंडे सेने का विचार है और वह उस मनोस्थिति में प्रवेश कर चुकी है। वो इस निष्कर्ष पर इसलिए पहुँचीं क्योंकि उन्होंने प.या कि काली मुर्गी अचानक से गायव थी। वो उसकी तलाश में गई और उसे मुर्गी-घर में पाया। वो उस समय कुछ अंडों के ऊपर लेटी थी जिन्हें अभी बाहर निकालने का समय नहीं आया था। परंतु माँ ने जब उन अंडों को बाहर निकाला तब तक वो अंडे गर्म हो चुके थे।

माँ मुझे बाँस की एक छड़ी देकर बोलीं, "भगाओ इसको, जोर से चिल्लाओ और इसे जगाओ।"

"इसे अंडे सेने दो।"

माँ ने जोर देकर कहा, "कदापि नहीं। अगर मुर्गियाँ अंडे नहीं देंगी तो तुम्हारे कलम की स्याही खरीदने के लिए भी पैसे नहीं होंगे।"

मैं जानता था कि मैं अपनी माँ के फैसले को बदल नहीं सकता। मैंने बाँस की छड़ी ली और काली मुर्गी को बाहर निकालने के लिए दौड़ा। वह आगे-आगे दौड़ रही थी और मैं बाँस की छड़ी लिए उसका पीछा करते हुए जोर-जोर से चिल्ला रहा था, "ओ—! ओ—!" मैंने घर के आगे से पीछे तक, बाँस के जंगल से सब्जी के बगीचे तक, और सड़क से लेकर खेत तक उसका पीछा किया। काली मुर्गी को ऐसे भागता देख मुझे वास्तव में उसका पीछा करते हुए अपने दिल में एक अलग तरह का आनंद महसूस हो रहा था। मैंने अपनी दोनों आँखों से उसे गौर से देखा, पीछा करने की गति को और तेज कर दिया और चिल्लाने की आवाज को भी तेज कर दिया। इससे स्कूल जाने वाले छात्र और काम पर जाने वाले लोग रुक कर देखने लग गए। कई छोटी वहनें पहले तो वहीं खड़ी रहीं और चिल्लाईं, लेकिन वाद में वे भी साथ आ गईं और अन्य लोगों के साथ शामिल होकर मेरे साथ दौड़ने लगीं।

काली मुर्गी की गति धीरे-धीरे धीमी होती जा रही थी, उसके पंख भी टूट कर गिर रहे थे, और वो कई बार जमीन पर लड़खड़ा भी जा रही थी। लेकिन बाँस के डंडे को लहराता देख फिर से उठने और दौड़ते रहने के लिए संघर्ष करने लगती।

अंत में मैं थक कर वैठ गया और घास के ढेर के ऊपर गिर गया। मैं एक ओर हाँफता और दूसरी ओर अपने माथे से पसीना पोंछता।

काली मुर्गी घास के ढेर में घुसकर छिप गई और और शाम तक, जव तक वो उससे बाहर नहीं निकली, बिना एक शब्द आवाज किए उसके अंदर छिपी रही।

लेकिन इस डराने वाली घटना के वाद भी काली मुर्गी जागती हुई नहीं दिखी। वो अपने पंख ठीक कर क क क की आवाज करती हुई अभी भी पहले की तरह ही अंडे ढूँढ़ने में लगी

हुई थी। उसने अचानक से ही अपना वजन घटा लिया था और ऐसा लग रहा था कि वो अब केवल एक खाली खोल है। उसकी कलगी जो सुर्ख लाल हुआ करती थी, ने अपना खून जैसा लाल रंग खो दिया था, और उसके गहरे काले रंग के पंख ने भी अपनी चमक खो दी थी। पता नहीं ऐसा क्यूँ हुआ। शायद इसलिए क्योंकि वो हमेशा अपने पंख फैलाए होती और अन्य मुर्गियों को लगता है कि वो आक्रामक या फिर क्योंकि मुर्गियाँ भी इंसानों की तरह एक झुंड में किसी को मूर्ख वनाकर उसे छेड़ना पसंद करती हैं। संक्षेप में, वे समूह में उसका पीछा कर उस पर चोंच मारतीं। उसमें विरोध करने का न ही कोई विचार था और न ही प्रतिरोध करने की कोई क्षमता बची थी। जब वो हमला करने के लिए उसका पीछा करतीं तो वह केवल जल्दी से दौड़ कर किसी कोने में जाकर घुस जाती और फिर बाकी की मुर्गियों की चोंच से अपने पंखों पर मार खाती रहती। उसके चेहरे पर पहले से ही कई जगह से खून बह रहा था। जब भी मैं ऐसा दृश्य देखता तो एक ओर तो मुझे उसके जुनून पर गुस्सा आता, फिर दूसरी ओर मैं बाँस की छड़ी घुमा कर उन बदमाश मुर्गियों को भगाता ताकि वो अपने शरीर को छिपा सके।

कुछ दिनों बाद मौसी के घर जो चूजे निकल आए थे, वो घर आ गए।

जैसे ही काली मुर्गी ने चूजों की आवाज सुनी, उसने अपनी गर्दन सीधी की और बड़े-बड़े कदमों से दौड़ पड़ी। उसके पंख बड़े और हल्के थे, देख कर लग रहा था मानो वो उड़ रही हो। नन्हे चूजों को देखकर, बिना परवाह किए कि वहाँ पर कोई है या नहीं, वो क क क करते हुए दौड़ आई। वो माँ बनना चाहती थी। परंतु जब चूजों ने उसे देखा, तो वे ऐसे बच्चे की तरह हो गए जिसने किसी पागल को देख लिया हो और डर के मारे भागे। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने काली मुर्गी को कहते हुए सुना, "तुम ऐसे भाग क्यों गए?" और मैं उसे चूजों का हर जगह पीछा करते हुए देखने लगा। उनका पीछा कर उसने अपने बड़े पंखों को फैलाकर उन्हें ढँक लिया। पंखों के अंदर से चूजे अँधेरे में चिल्लाए और जोर लगाकर उसके अंदर से निकल कर लोगों के पैरों के बीच से भागे। उसने पूर्व से पश्चिम तक उन चूजों का पीछा किया। इधर-उधर चारों ओर बस चूजों की "चीं चीं चीं" की आवाज भर गई।

माँ ने कहा, "जल्दी से इसे बाहर भगाओ!"

मैंने बाँस की छड़ी ली और उसकी ओर भागा। पहले तो उसने परवाह नहीं की, लेकिन अंत में अपने शरीर पर बाँस के डंडे के दर्द को सहन नहीं कर सकी और इसलिए चूजों को छोड़कर बाँस के जंगल की ओर भाग खड़ी हुई।

हम फिर एक-एक कर डरे हुए चूजों को वापस लेकर आए। एक-दूसरे को देखने के बाद वे खुशी से एक साथ समूह बनाकर खड़े हो गए। उनकी आँखें डर के भरी हुई थीं।

लेकिन बाँस के जंगल में काली मुर्गी लगातार जोर-जोर से चिल्ला रही थी। जब वो चिल्लाना बंद करती तो वो अपनी चोंच जमीन पर मारती। वास्तव में, वो चोंच मार नहीं रही थी वल्कि केवल चोंच मारने का दिखावा कर रही थी। उसकी नजर में उसके चारों ओर चूजों

का झुंड था। वो उन्हें चोंच मारना सिखाना चाह रही थी। कुछ देर चोंच मारने के बाद उसने अप्रत्याशित रूप से खुशी में अपने पंख फड़फड़ाए।

अंत में जब उसे पता चला कि वह तो अकेली है तो वह दहशत में बाँस के जंगल से बाहर भागी और चिल्लाने लगी।

जिन चूजों को माँ ने पकड़ कर वापस पिंजरे में रख दिया था, वो काली मुर्गी की आवाज सुनकर एक साथ ठिठक गए और काँपने लगे।

माँ ने कहा, "तुम्हें इस पागल मुर्गी को जगाना ही होगा, नहीं तो चूजों का यह समूह चैन से नहीं रह पाएगा।"

माँ ने काली मुर्गी से निपटने के लिए पड़ोसी माओ थोउ को बुलाया जो कि मुर्गी जगाने के विशेषज्ञ माने जाते थे। माओ थोउ ने एक छोटा झंडा-सा बनाया, फिर मंद-मंद मुस्कुराते हुए काली मुर्गी को पकड़ा और छोटे झंडे को उसकी पूँछ से बाँध दिया। माओ थोउ ने इसके बाद काली मुर्गी को छोड़ दिया। उसने गलती से सोचा कि कोई उसकी ओर उड़कर आ रहा है और वो चिल्लाने लगी। उसने पागलों की तरह भागना शुरू कर दिया। दौड़ने के कारण छोटा झंडा पूँछ पर सीधा लहराने लगा और हवा से सरसराहट की आवाज आने लगी। काली मुर्गी के मन के भीतर का आतंक बढ़ रहा था और उसने पूरी जान लगाकर दौड़ना शुरू कर दिया।

हम सब उसे देखने के लिए बाहर भागे। अब काली मुर्गी के पीछे किसी को दौड़ने की जरूरत नहीं थी। वो खुद उस झंडे को देख कर घर के आगे पीछे बिना रुके दौड़ रही थी। पड़ोसियों के घर के बच्चे ये देख खुशी से ताली बजाने लगे।

काली मुर्गी बाद में उड़कर घास के ढेर में चली गई। उसने सोचा कि छोटे झंडे से छुटकारा मिल गया। वो नहीं चाहती थी कि झंडा उसका पीछा करे। जब उसे लगा कि अब उसका कोई पीछा नहीं कर रहा है तो वो फिर घास के ढेर से उड़ कर नीचे आई। जैसे ही वह घास के ढेर से नीचे उड़ी, मैंने देखा कि छोटा झंडा हवा में उड़ रहा है, मानो काली मुर्गी के उपर एक और पंख लगा दिया गया हो।

अन्य मुर्गियाँ भी चौंक गईं और इधर-उधर उड़ने लगीं। घर का कुत्ता भी भौं-भौं कर बेतहाशा भौंकने लगा। वास्तव में कोई भी मुर्गी या कुत्ता इससे बचा नहीं था।

काली मुर्गी बाँस के जंगल में घुस गई, छोटा झंडा बाँस में उलझ गया और अंत में उसकी पूँछ से खिंच कर अलग हो गया। वह जमीन पर गिर गई। वो लंबे समय तक उठने में असमर्थ रही और मुँह खोलकर हाँफने लगी। काली मुर्गी बहुत कोशिश करने के बाद भी उठ नहीं पाई। और इस भयावह दृश्य को देख कर बाकी की मुर्गियों ने भी अंडे नहीं दिए।

"इसे बेच दो।" मैंने कहा।

माँ ने कहा, "किसे ये हड्डी चाहिए होगी।"

पड़ोसी माओ थोउ काली मुर्गी से निपटने में बड़े खुश से नजर आ रहे थे। वह फिर

से मुस्कुराए, और काली मुर्गी को नदी के किनारे लेकर गए। अचानक अपने शरीर को घुमाया और काली मुर्गी को नदी में फेंक दिया। काली मुर्गी पानी में गिर गई, कुछ देर के लिए डूबी, फिर पहले पानी से गर्दन निकाली और तैरकर किनारे की ओर चली आई। माओ थोउ पहले से हीं वहाँ खड़े थे। जैसे उसके तैरकर किनारे तक पहुँचने का ही इंतजार कर रहे हों। उन्होंने उसे पकड़ा और फिर से उसे नदी में फेंक दिया। माओ थोउ क्रूरता से मुस्कुरा रहे थे जैसे उन्हें अंदर ही अंदर आनंद प्राप्त हो रहा हो। जब-जब काली मुर्गी तैर कर किनारे पर आती वो उसे फिर से नदी में फेंक देते। वो लगातार ऐसा करते रहे जब तक कि काली मुर्गी गतिहीन नहीं हो गई। मुर्गी के पंख बत्तख के पंख की तरह नहीं होते। वो पानी को नहीं सोखते। कुछ मर्तबा तैरने के बाद उसके पंख पूरी तरह से गीले हो गए थे और शरीर गेंद की तरह पानी में डूबने लगा। उसने अपने पंखों को जोर से फड़फड़ाया और बड़ी मुश्किल से तैरकर किनारे तक पहुँची। कई बार देखकर ऐसा लगा कि वो अगले पल डूबने वाली हो, परंतु उसने पूरी शक्ति लगाकर अपनी गर्दन को बाहर निकाला और फिर से तैरने को संघर्ष करने लगी।

माओ थोउ का खुद का पूरा शरीर पानी से लगभग भर गया था।

जब काली मुर्गी पुनः तैरकर किनारे पर लौट आई, तो माँ ने उसे पानी के अंदर फेंकने से मना किया।

काली मुर्गी किनारे पर आ गई लेकिन एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकी। मैंने उसे पकड़ा और घास के ढेर पर रख दिया। उसने अपने शरीर को सिकोड़ लिया। वो धूप में भी काँप रही थी। उसकी सुस्त आँखों में जैसे कुछ भी नहीं बचा हो।

काली मुर्गी अजीब-सी हो गई थी। वह रात में मुर्गीखाने में प्रवेश करने से इंकार कर देती, और सुबह देर तक तलाश करने के बाद मिलती। सुबह जब मुर्गीखाने से बाहर निकलती तो अकेले भाग जाती। या तो घास के ढेर में छेदकर उसके अंदर छुप जाती, या एक पुराने टूटे बक्से में जाकर छुप जाती। इसकी वजह से परिवार के सभी लोग बहुत परेशान हो गए। एक-दो दिनों के बाद यह स्थिति और बिगड़ गई। जैसे ही चूजों का बास्केट आँगन में रखा जाता ताकि चूजे आँगन में खेल सकें, तो मौका मिलते ही वो चूजों का पीछा करने लग जाती। जब वो पीछा कर उन्हें पकड़ लेती तो बाज की भाँति, पागल की तरह अपने पंखों से चूजों को मारने लगती, जिस से कि वो चिल्लाएँ।

माँ ने उसे भगाते हुए कहा, "अभी तेरी खाल उधेड़ती हूँ!" एक दिन जब घर में कोई नहीं था, काली मुर्गी ने एक चूजे को पकड़ लिया। शायद इसलिए क्योंकि उस चूजे ने उसे नहीं पहचाना। उसने उसके दुलार से छुटकारा पाने की कोशिश की तो काली मुर्गी ने चूजे के पंख में चोंच मार दी।

जब माँ घर वापस आईं तो चूजे के पंखों से खून बहता देख बहुत परेशान हुई। उन्होंने फिर से माओ थोउ को बुलवाया।

माओ थोउ ने कहा, "इस बार अगर यह नहीं जागी तो यह वास्तव में नहीं जागेगी।"

उन्होंने एक काला कपड़ा उठाया, और उस से काली मुर्गी की आँखों को ढँक दिया। फिर उसे उठाकर उसके पंजों को कपड़े सुखाने वाले तार के ऊपर रख दिया।

काली मुर्गी तार पर लटकी हुई थी और तार झूल रहा था। उस समय उसके डर की कल्पना नहीं की जा सकती है। शायद उस व्यक्ति से भी ज्यादा जो एक विशाल खाई का सामना करते हुए एक चट्टान पर खड़ा हो। क्योंकि आखिर लोग खाई की गहराई देख सकते हैं लेकिन इस काली मुर्गी की आँखों के सामने तो अँधेरा था। उसने अपने दो पंजों से तार को मजबूती से पकड़ लिया और पंख फैला कर संतुलन बनाए रखने की कोशिश करने लगी।

हवा चल रही थी और हवा के कारण तार से वू-वू जैसे सीटी की आवाज आ रही थी। काली मुर्गी तार पर जोर से झूलने लगी। वो अपने दो पंजों से तार को पकड़ने के अलावा नीचे बैठ गई और तार के उपर अपनी छाती दबाई। उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वो अपने पंखों को बंद कर दे। फिर भी लंबे समय तक दृढ़ता के साथ संतुलन बनाए रखना संभव नहीं था। ऐसा कई बार लगा कि वो तार से गिरने वाली है लेकिन जब भी ऐसा होता वो किसी न किसी तरह अपने पंखों की मदद से तार के ऊपर टिकी रहती।

मैंने उसे एक बार गौर से देखा और स्कूल चला गया।

कक्षा में मैं शिक्षक की बातों पर ध्यान ही नहीं दे पा रहा था। मेरी आँखों के सामने तो लगातार एक तार लहराता और उस तार पर डगमगाती हुई काली मुर्गी दिख रही थी। स्कूल से छुट्टी होते ही मैं जल्दी से घर पहुँचा और उसे देखने के लिए आँगन में गया। वहाँ देखता हूँ कि काली मुर्गी चमत्कारिक ढंग से तार के ऊपर अभी भी टिकी हुई है। मैंने फौरन उसे गले से लगा लिया और काले कपड़े को उसकी आँखों से खोल कर उसे उतार कर जमीन पर रखा। वह जमीन पर ऐसे पड़ी थी मानो उसे लकवा मार गया था। वो एक कदम भी नहीं चल पा रही थी।

माँ मुट्ठी-भर चावल लेकर आई और उसके मुँह के पास रख दिए। उसने कुछ दाने खाए और फिर खाना बंद कर दिया। माँ फिर आधा कटोरी पानी लेकर आई। वह इतनी प्यासी थी कि उसने बिना इंतजार किए पलक झपकते ही कटोरे का सारा पानी खत्म कर दिया। फिर वो धीरे-धीरे खड़ी हुई और बाड़ के अंदर चली गई। शायद उसके अंदर जरा-सी भी ताकत नहीं बची थी इसलिए वो बाड़ के अंदर बैठ गई। वो एकदम शांत-सी प्रतीत हो रही थी। माँ ने आह भरते हुए कहा, "इस बार शायद यह जाग गई है। अगर यह अब भी नहीं जागी है तो अब इसे फिर दुबारा नहीं जगाना है।"

शाम के समय जब काली मुर्गी और अन्य मुर्गियाँ लगभग घोंसले में प्रवेश करती हैं, उस समय वो भी डगमगाती हुई घोंसले में चली गई।

मैंने माँ से कहा, "ये तो डर के कारण सच में जाग गई है।"

माँ ने कहा, "इसे बाद में अलग से लेकर लाओ और इसके पसंद का कुछ खाने को दे दो।"

हालाँकि, दो दिनों के वाद, काली मुर्गी लापता हो गई। चाहे उसे चारों दिशाओं में कितना भी ढूँढ़ा गया, कितनी वार भी पुकार लगा कर वुलाया गया, फिर भी वो कहीं भी नहीं मिली। हम सब केवल यह आशा ही कर सकते थे कि वो अपने आप कहीं से वापस आ जाएगी। लेकिन एक हफ्ता गुजर जाने के वाद भी उसका कोई अता-पता नहीं था।

मैं उसकी खोज में सारी दुनिया गया, जोर-जोर से पुकारा।

माँ ने कहा, "मुझे डर है कि कहीं उसे नेवला ना ले गया हो।"

हम अंत में निराश हो गए थे।

माँ को बहुत अफसोस हुआ, "उसे किसने पागल बना दिया?"

पहले तो मैं उसके बारे में बहुत सोचता, लेकिन दस दिनों के बाद उसकी यादें धुँधली पड़ने लगीं।

काली मुर्गी के गायब होने के लगभग तीस दिनों के बाद, मैं और मेरी माँ सब्जी के बगीचे में सब्जियाँ उगा रहे थे। तभी हमें पास के बाँस के जंगल से एक छोटे चूजे की आवाज सुनाई दी। "हमारे बाँस के जंगल में किसके चूजे आए हैं?" माँ ने कहा, लेकिन हमें कोई परवाह नहीं थी। लेकिन थोड़ी देर के बाद, मैंने फिर से मुर्गी की क क क की आवाज सुनी। सुनते ही मैं और माँ एक साथ खड़े हो गए, "ये तो हमारी काली मुर्गी की आवाज लगती है?" आँखों के सामने का दृश्य देख माँ और मैं दोनों दंग रह गए।

काली मुर्गी चूजों के एक समूह को बाँस के जंगल से बाहर लिए आ रही थी। वो एक विलो के पेड़ के नीचे पहुँची। दोपहर का समय था, सूरज वहुत तेज चमक रहा था, और विलो के रेशम धीरे-से हवा में लहरा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि चूजे कुछ दिनों के हो गए थे, और उनके पंखों का रंग दिख रहा था। वे सफेद बर्फ की एक गेंद की तरह लग रहे थे। सभी खुशी से काली मुर्गी के चारों ओर खेल रहे थे। उनमें से एक, रेशम के धागे को उड़ते देख फड़फड़ाते हुए उस पर कूद गया। वो उसे अपनी चोंच से पकड़ना चाहता था लेकिन असफल रहा। पकड़ने के प्रयास में वो पलट कर बेढंगे रूप से जमीन पर गिर गया। काली मुर्गी को करीब से देखकर, ये देखा जा सकता था कि वो बिलकुल शांतचित्त दिख रही थी, उसके चेहरे पर न तो मोह था न ही पागलपन। उसकी कलगी भी बिलकुल लाल थी और उसके पंख घने और चमकदार थे।

मैं वाड़ के ऊपर से कूद गया, जल्दी से भाग कर घर से मुट्ठी में चावल लाया और धीरे-से जाकर काली मुर्गी और उसके सफेद चूजों के समूह के सामने डाल दिए। वे लोगों से डरे नहीं और खुशी से दाना चुगने लगे।

माँ सोच रही थीं, "इसने ये बच्चे कहाँ से निकाले?"

छह महीने बाद, मैं और माँ घास का ढेर लेने के लिए अपने घर से पचास मीटर दूर पूर्वी नदी के किनारे गए। हमने पाया कि उस छेद में कई खून से सने अंडे के छिलके थे, जहाँ वच्चे छिपन-छिपाई खेलते थे। माँ और मैंने अनुमान लगाया कि ये अंडे उसी समय के

हैं जब काली मुर्गी पागल हुई थी। उस समय बाकी की मुर्गियाँ भी डर गई थीं और किसी में भी घर के घोंसले में अंडे देने की हिम्मत नहीं थी। उन्होंने ही यहाँ अंडे दिए होंगे। इस जगह पर बहुत खरपतवार उगती है, और यहाँ बहुत कम लोग आते हैं। संभवतः घास के बीज और कीड़ों से ही काली मुर्गी और उसके बच्चों का जीवन चलता होगा।

काली मुर्गी के फिर से आने के बाद, उसे दुबारा कभी भी अपने बच्चों को घास के ढेर की ओर नहीं ले जाने दिया गया।

❑